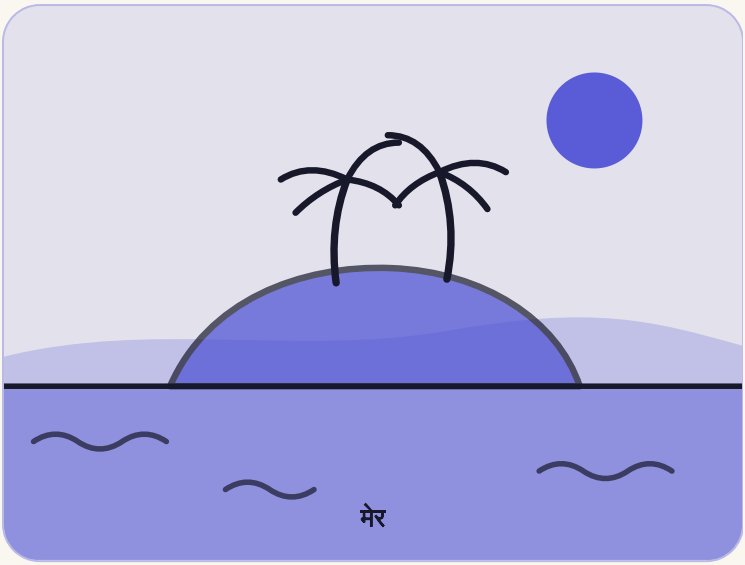

ऑस्ट्रेलिया

वह माली जिसने ऑस्ट्रेलिया का क़ानून बदला

एडी माबो ने पूछा कि उसके द्वीप का मालिक कौन है। उसके दस साल के मुक़दमे ने पूरे देश का क़ानून बदल दिया।

कहाँ मेर (मरे द्वीप), टोरेस स्ट्रेट

कौन एडी कोइकी माबो, टोरेस स्ट्रेट के एक माली, जिन्होंने माबो मुक़दमा लड़ा

कब 1936 से 1992

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

एडी कोइकी माबो का जन्म 1936 में मेर पर हुआ, जो ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में टोरेस स्ट्रेट का एक छोटा द्वीप है। मेर मरे द्वीपों में से एक है, जिनमें दाउअर और वाइअर भी हैं। द्वीप के लोग मेरियम लोग हैं। उनके अपने क़ानून थे कि ज़मीन का हर टुकड़ा किसका है।

बड़े होकर माबो ऑस्ट्रेलिया की मुख्य भूमि पर टाउंसविल के एक विश्वविद्यालय में माली का काम करते थे। एक दिन दो इतिहासकारों ने उन्हें एक चौंकाने वाली बात बताई, एक बयान के मुताबिक़। ऑस्ट्रेलिया के क़ानून में उनका द्वीप उनका नहीं था। वह ताज, यानी शासन का था।

> नामुमकिन, वह उनका नहीं, हमारा है।
>
> एडी माबो, इतिहासकार नोएल लूस की याद के मुताबिक़

अदालत में दस साल

ऑस्ट्रेलिया के क़ानून में एक नियम था, जिसे *terra nullius* कहते हैं। इसका मतलब है “ऐसी ज़मीन जो किसी की नहीं।” जब ब्रिटेन ने ऑस्ट्रेलिया पर दावा किया, तो क़ानून ने कहा कि ज़मीन किसी की थी ही नहीं।

1982 में माबो और चार दूसरे मेरियम लोग अपना दावा अदालत में ले गए। क्वींसलैंड सरकार ने दलील दी कि द्वीप 1879 में अपने कब्ज़े में आने पर ताज की संपत्ति बन गया। मुक़दमा बरसों खिंचता रहा।

10	7 में से 6	500+
मुक़दमा कितने साल चला	हाई कोर्ट के जज सहमत थे	2022 तक कामयाब मूल-निवासी भूमि-अधिकार दावे

पाँच महीने की देर

माबो को कैंसर हो गया। 21 जनवरी 1992 को 55 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। मुक़दमा लाने वाले पाँच में से तीन फ़ैसले से पहले चल बसे।

माबो की मौत के पाँच महीने बाद, 3 जून 1992 को, हाई कोर्ट ने अपना जवाब दिया। सात में से छह जज सहमत थे। मेरियम लोग अपने द्वीपों के “पूरी दुनिया के मुक़ाबले हक़दार” थे।

इससे भी बड़ी बात, जजों ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया किसी की न होने वाली ज़मीन नहीं था। मूल निवासी यहाँ 65,000 साल से ज़्यादा से रहते और ज़मीन से जुड़े रहे हैं। देश भर के मूल निवासी अपने क़ानूनों के तहत ज़मीन के अधिकार रख सकते थे। वे अधिकार तब तक बने रहे जब तक क़ानून ने उन्हें ख़त्म न किया हो।

अगले साल संसद ने मूल-निवासी भूमि-अधिकार क़ानून, यानी *Native Title Act*, पास किया। 2022 तक 500 से ज़्यादा कामयाब दावे हो चुके थे। हर साल 3 जून को ऑस्ट्रेलिया माबो दिवस मनाता है।

कब क्या हुआ

- **1936** एडी माबो का जन्म टोरेस स्ट्रेट के मेर पर होता है।
- **1982** माबो और चार दूसरे मेरियम लोग अपना मुक़दमा शुरू करते हैं।
- **1992** जनवरी में माबो का निधन। 3 जून को हाई कोर्ट मेरियम लोगों के पक्ष में फ़ैसला देता है।
- **1993** संसद Native Title Act पास करती है।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

वे माली थे, वकील नहीं। दोपहर के खाने की एक बातचीत दस साल की लड़ाई बन गई।

वे फ़ैसला देख नहीं पाए। लेकिन उनका नाम एक ऐसे मुक़दमे पर है जिसने पूरे देश का ज़मीन का क़ानून बदल दिया।

हमारी राय

एक आदमी ने मानने से इनकार कर दिया कि उसका घर किसी का नहीं है। क़ानून को उससे सहमत होना पड़ा।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 सीधा सवाल पूछिए

उन्होंने पूछा कि उनके द्वीप का मालिक कौन है, और फिर “कोई नहीं” मानने से इनकार किया।

यह आज़माएँ: कोई एक नियम लिखिए जिसे आप हमेशा से मानते आए हैं। पूछिए कि उसे किसने और क्यों तय किया।

2 अपनी कहानी को जानिए

मेरियम लोगों के पास ज़मीन के मालिकाने के पुराने, बारीक क़ानून थे।

यह आज़माएँ: ऐसी एक बात लिखिए जो आपका परिवार जानता है और जो किसी काग़ज़ में दर्ज नहीं।

3 लड़ाई साझा कीजिए

पाँच मेरियम लोगों ने मुक़दमा किया, उनके साथ इतिहासकार और वकील थे।

यह आज़माएँ: दो ऐसे लोगों के नाम लिखिए जो इस महीने आपका कोई लक्ष्य साझा कर सकते हैं।

4 लंबा खेल खेलिए

मुक़दमा दस साल चला। माबो अंत नहीं देख पाए।

यह आज़माएँ: एक ऐसा लक्ष्य चुनिए जिसमें बरसों लगेंगे। हर हफ़्ते उसके लिए एक छोटा काम कीजिए।

साथ ले जाने वाली एक बात

एक सीधा सवाल, बार-बार पूछा जाए, तो देश का क़ानून हिला सकता है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Parliament of Australia
The Mabo decision

ANU College of Arts and Social Sciences
1992 – Mabo v. Queensland, by Henry Reynolds (2024)

Justice and Peace Office, Archdiocese of Sydney
Mabo Day (2017), drawing on AIATSIS

Wikipedia
Eddie Mabo

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। फ़ैसला और उसका मतलब Parliament of Australia और Henry Reynolds के ANU लेख (Australian Dictionary of Biography से पुनर्प्रकाशित) से हैं, जो 3 जून 1992, सात में से छह जजों के बहुमत, terra nullius को ठुकराने और “पूरी दुनिया के मुक़ाबले हक़दार” उद्धरण पर सहमत हैं। दावा मई 1982 में पाँच मेरियम लोगों के साथ शुरू हुआ (ANU); Parliament of Australia इसे दस साल की क़ानूनी कार्यवाही कहता है। क्वींसलैंड ने दलील दी कि द्वीप 1879 में कब्ज़े में आने पर ताज की संपत्ति बन गया (ANU)। तीन वादी, Sam Passi, Celuia Mapo Salee और Eddie Mabo, फ़ैसले से पहले चल बसे (Parliament of Australia)। माबो के जीवन के ब्योरे (1936 में मेर पर जन्म, James Cook University में माली, 21 जनवरी 1992 को 55 साल की उम्र में कैंसर से निधन, फ़ैसले से पाँच महीने पहले) Wikipedia से हैं, जो दूसरे स्रोतों का हवाला देता है; उन्हें किसी दूसरे पन्ने से मिलाया नहीं गया, इसलिए कहानी उन्हें कम से कम रखती है। जिस बातचीत में दो इतिहासकारों ने माबो को बताया कि उनका द्वीप ताज की ज़मीन है, उसे इतिहासकार Noel Loos ने सुनाया, जैसा Wikipedia में उद्धृत है; Wikipedia उसे 1974 का बताता है, जबकि दूसरे बयान उनके मुक़दमा करने के फ़ैसले को 1981 के भूमि-अधिकार सम्मेलन से जोड़ते हैं, इसलिए कहानी कोई तारीख़ नहीं देती और “एक बयान के मुताबिक़” कहती है। उद्धरण “नामुमकिन, वह उनका नहीं, हमारा है” माबो के कहे की Loos की याद है, कोई दर्ज बयान नहीं। terra nullius नियम को ANU 1788 का बताता है और Parliament of Australia Cook के 1770 के दावे से जोड़ता है; कहानी कोई तारीख़ नहीं देती। Native Title Act संसद से दिसंबर 1993 में पास हुआ और 1 जनवरी 1994 को लागू हुआ (Parliament of Australia); कहानी कहती है कि संसद ने उसे “अगले साल” पास किया। 2022 तक 500 से ज़्यादा कामयाब मूल-

निवासी भूमि-अधिकार दावे ANU से हैं। Parliament of Australia का पन्ना आदिवासी और टोरेस स्ट्रेट द्वीपवासी पाठकों को चेताता है कि उसमें दिवंगत लोगों के नाम हैं; यह कहानी भी ऐसा ही करती है। 3 जून का माबो दिवस Parliament of Australia से है। “65,000 साल से ज़्यादा” Parliament of Australia से है। नक़्शे का निशान मेर द्वीप दिखाता है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।